

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 7 अध्याय 9: प्रह्लाद की प्रार्थना

14 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



जब स्वयं देवता क्रुद्ध भगवान् के निकट जाने का साहस न कर सके, तब एक छोटा बालक आगे बढ़ा, भूमि पर प्रणाम किया, और भगवान् के अपने हाथ से उठाया गया। तब उसके हृदय से जो प्रवाहित हुआ, वह समस्त शास्त्र की सर्वाधिक प्रिय प्रार्थनाओं में से एक है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में भगवान् नृसिंह रूप में प्रकट हुए और संसार को अत्याचारी हिरण्यकशिपु से मुक्त किया; सप्तम स्कन्ध का यह नवम अध्याय उसका कोमल अनुवर्ती है, जिसमें एक छोटे बालक की प्रार्थना वहाँ सफल होती है जहाँ जाने का साहस स्वयं देवता भी नहीं जुटा सके।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 7 (सप्तम स्कन्ध)
- अध्याय: 9
- अध्याय-शीर्षक: प्रह्लाद की भगवान् नृसिंह से प्रार्थना
- मुख्य वक्ता: प्रह्लाद, भगवान् को प्रार्थना अर्पित करते हुए (नारद द्वारा सम्राट युधिष्ठिर को सुनाई गई कथा के भीतर)
- मुख्य श्रोता: भगवान् नृसिंह; तथा कथा-परिधि में, सम्राट युधिष्ठिर
- मुख्य स्थान: हिरण्यकशिपु का दरबार, विराजमान भगवान् नृसिंह के सम्मुख
- मुख्य विषय-वस्तु: भगवान् को शान्त करती प्रह्लाद की प्रार्थना — सांसारिक योग्यताओं की व्यर्थता, भक्ति की सर्वोच्चता, तथा समस्त पीड़ित आत्माओं के लिए उसकी करुणा पर
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 7, अध्याय 9, श्लोक 1-55
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

बालक आगे आता है

देवता तथा दिव्य प्राणी, ब्रह्मा तथा रुद्र के नेतृत्व में, भगवान् के निकट न जा सके, इतना भयंकर था उनका क्रोध। स्वयं देवी श्री, जिन्हें उन्हें प्रसन्न करने भेजा गया, एक ऐसे रूप के सम्मुख झिझक गई जिसे उन्होंने पहले न देखा था न सुना था। तब ब्रह्मा समीप खड़े बालक की ओर मुड़े। “निकट जाओ, प्रिय,” उन्होंने कहा, “और भगवान् को शान्त करो, जो तुम्हारे पिता के कारण क्रुद्ध हुए हैं।” “ऐसा ही हो” कहकर, प्रह्लाद धीरे-धीरे निकट आया और भूमि पर साष्टांग गिर पड़ा, हाथ जोड़े। अपने चरणों में गिरे उस शिशु को देख करुणा से अभिभूत होकर, भगवान् ने उसे उठाया और उसके सिर पर वह कर-कमल रखा जो समस्त भय हर लेता है। उस स्पर्श से हर अशुद्धि का चिह्न मिट गया, उसके भीतर परम का साक्षात् ज्ञान उदित हुआ, और — रोमांचित होकर, आँखों में अश्रु भरे — प्रह्लाद ने भगवान् के चरणों को अपने हृदय में स्थापित किया और प्रेम से रूँधे स्वर में उनकी स्तुति आरम्भ की।



भगवान् साष्टांग बालक प्रह्लाद को उठाते हैं और उसके सिर पर वह कर-कमल रखते हैं जो समस्त भय हर लेता है, उसमें परम का साक्षात् ज्ञान जगाते हुए (SB 7.9.4-6)।

मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ

प्रह्लाद ने निःशस्त्र कर देने वाली विनम्रता से आरम्भ किया। यदि ब्रह्मा, देवता, ऋषि, तथा सिद्ध भी, जिनके मन सत्त्व में लीन हैं, आज तक भगवान् को अपनी वाग्धाराओं से सन्तुष्ट नहीं कर सके — तो, उसने पूछा, एक उग्र असुर-कुल में जन्मा व्यक्ति उन्हें प्रसन्न करने की आशा कैसे कर सकता है?

श्रीप्रह्लाद उवाच

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः

सत्त्वैकतानगतयो वचसां प्रवाहैः ।

नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः

किं तोष्टुमर्हति स मे हरिरुग्रजातेः ॥ ८ ॥

śrī-prahrāda uvāca brahmādayaḥ sura-gaṇā munayo 'tha siddhāḥ sattvaikatāna-gatayo vacasāṁ pravāhaiḥ nārādhituṁ puru-guṇair adhunāpi pipruḥ kiṁ toṣṭum arhati sa me harir ugra-jāteḥ

अर्थ: प्रह्लाद ने कहा: ब्रह्मा तथा देवगण, ऋषि, और सिद्ध, जिनके मन पूर्णतः सत्त्व में स्थित हैं, आज तक अनेक गुणों से युक्त अपनी वाग्धाराओं से श्रीहरि को प्रसन्न नहीं कर सके। तो फिर, एक उग्र कुल में जन्मे मुझसे वे कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? (SB 7.9.8)

फिर भी उसने निराशा नहीं की, क्योंकि वह जानता था कि भगवान् योग्यताओं से नहीं अपितु प्रेम से जीते जाते हैं। न धन, न उच्च जन्म, न सौन्दर्य, न तप, न विद्या, न बल, न प्रतिभा, उसने कहा, परम पुरुष को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त है — भगवान् तो संकट में पड़े एक गजराज की मात्र भक्ति से ही प्रसन्न हो गए थे। वह और आगे गया, यह घोषित करते हुए कि एक चाण्डाल जिसने अपना मन, वचन तथा जीवन भगवान् को अर्पित कर दिया है, उस विद्वान् ब्राह्मण से श्रेष्ठ है जिसने उनके चरणों से मुख मोड़ लिया है:

विप्राद् द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ-
पादारविन्दविमुखात् श्वपचं वरिष्ठम् ।
मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ-
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः ॥ १० ॥

*viprād dvi-ṣaḍ-guṇa-yutād aravinda-nābha- pādāravinda-vimukhāt śvapacāṁ variṣṭham manye
tad-arpita-mano-vacanehitārtha- prāṇaṁ punāti sa kulaṁ na tu bhūrimānaḥ*

अर्थ: मैं उस नीचतम कुल में जन्मे व्यक्ति को, जिसने अपना मन, वचन, कर्म, धन तथा प्राण तक कमल-नाभि भगवान् को अर्पित कर दिया है, उस बारहों श्रेष्ठ गुणों से युक्त ब्राह्मण से कहीं श्रेष्ठ मानता हूँ जिसने उन चरण-कमलों से मुख मोड़ लिया है; क्योंकि पहला अपने समूचे कुल को पवित्र कर देता है, जबकि दूसरा, अभिमान से भरा, नहीं। (SB 7.9.10)



प्रेम से पिघलते हृदय के साथ, बालक प्रह्लाद अपनी प्रार्थना अर्पित करता है, यह घोषित करते हुए कि केवल भक्ति ही — न जन्म, न धन, न विद्या — भगवान् को प्रसन्न कर सकती है (SB 7.9.8-11)।

आपका क्रोध शान्त हो

अपना समस्त भय दूर होने पर, प्रह्लाद ने कोमलता से भगवान् से प्रार्थना की कि वे अपना क्रोध शान्त होने दें, अब जबकि असुर मारा जा चुका है और समस्त लोक शान्त हैं। भगवान् का क्रोध भी, वह समझता था, संसार के हित के लिए था, जैसे कोई बिच्छू या सर्प से मुक्त होकर प्रसन्न होता है; और आने वाले युगों में लोग नृसिंह के इसी रूप को भय से मुक्ति के लिए स्मरण करेंगे। जहाँ तक स्वयं का प्रश्न था, वह उस उग्र मुख से नहीं डरता था। जो उसे डराता था वह सर्वथा भिन्न था — जन्म-मृत्यु का अनन्त चक्र, तथा क्रूर एवं लोभी संगति में डाला जाना। कब, उसने पूछा, भगवान् उसे अपने चरणों की शरण में बुलाने की कृपा करेंगे?

ऐसी कृपा जो पहले कभी नहीं मिली

अपनी प्रार्थना को आगे बढ़ाते हुए, प्रह्लाद अपने पिता के वध से भी अधिक विस्मयकारी किसी बात पर चकित हुआ। वह, जो उस कुल में जन्मा जो भगवान् के सर्वथा विरुद्ध खड़ा है, तमोगुण से आच्छादित — वह क्या था कि भगवान् की करुणा उसकी ओर मुड़े ही? और तब उसने इस आश्चर्य को ठीक-ठीक नाम दिया: वही कर-कमल, जो अब उसके सिर पर टिका है, कभी न ब्रह्मा के सिर पर रखा गया था, न रुद्र के, न देवी श्री के भी, जो भगवान् का साथ कभी नहीं छोड़तीं।

क्वाहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन्

जातः सुरेतरकुले क्व तवानुकम्पा ।

न ब्रह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया

यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः ॥ २६ ॥

kvāhaṁ rajah-prabhava īśa tamo 'dhike 'smin jātaḥ suretara-kule kva tavānukampā na brahmaṇo na tu bhavasya na vai ramāyā yan me 'rpitaḥ śirasi padma-karaḥ prasādaḥ

अर्थ: मैं कहाँ, देवताओं के विरुद्ध कुल में जन्मा तथा तमोगुण में डूबा हुआ, और कहाँ आपकी वह करुणा — जो न ब्रह्मा को दी गई, न शिव को, न लक्ष्मी को भी, किन्तु जिसने आपका कर-कमल मेरे सिर पर रख दिया? (SB 7.9.26)

यही वह बिन्दु है जिस पर भक्त इस अध्याय में बार-बार लौटता है: भगवान् की कृपा महानता की सीढ़ी ऊपर नहीं चढ़ती, कि पहले बड़ों को फिर छोटों को पुरस्कृत करे। यह तो, यदि कुछ है, उल्टी दिशा में बहती है। ब्रह्मा सृजन करते हैं, शिव संहार करते हैं, और श्री कभी उनके पास से नहीं हटतीं — फिर भी एक असुर के पुत्र को, जो केवल टूटी हुई वाणी और समर्पित हृदय के अतिरिक्त कुछ नहीं अर्पित करता, यह विशेष अनुग्रह मिलता है। प्रह्लाद का जन्म, उसका कुल, उसका अतीत — कुछ भी इसे अर्जित नहीं कर सका था और कुछ भी इसे रोक नहीं सका; निहंतुक कृपा का यही सम्पूर्ण अर्थ है।

संसार में निर्भय, पतितों के लिए शोकाकुल

तब वे वचन आए जिनके लिए यह प्रार्थना सर्वाधिक प्रिय है। प्रह्लाद ने घोषित किया कि, भगवान् की महिमा गाने के अमृत में अपने मन को डुबोकर, वह सांसारिक अस्तित्व के भयंकर सागर से तनिक भी नहीं डरता। उसका शोक स्वयं के लिए नहीं, अपितु दूसरों के लिए था — उन विमूढ़ आत्माओं के लिए जो भगवान् से मुख मोड़ लेती हैं और क्षणभंगुर, मायावी सुख के लिए सांसारिक जीवन का कुचल देने वाला भार ढोती हैं।

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्या-

स्त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः ।

शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ

मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान् ॥ ४३ ॥

naivodvije para duratyaya-vaitaraṇyās tvad-vīrya-gāyana-mahāmṛta-magna-cittaḥ śoce tato vimukha-cetasa indriyārtha-māyā-sukhāya bharam udvahato vimūḍhān

अर्थ: हे परम भगवन्, आपकी महिमा गाने के महान अमृत में अपने मन को डुबोए, मैं सांसारिक अस्तित्व के इस दुस्तर सागर से नहीं डरता। मेरा शोक उन विमूढ़ आत्माओं के लिए है जो, आपसे अपना मन मोड़कर, मायावी विषय-सुख के लिए सांसारिक जीवन का भारी बोझ ढोती हैं। (SB 7.9.43)

अधिकांश ऋषि, उसने कहा, अपनी मुक्ति की कामना से मौन तथा एकान्त में विचरते हैं, दूसरों के हित की चिन्ता किए बिना; किन्तु वह इन असहायों को पीछे छोड़कर स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता। संसार में भटकती इन आत्माओं के लिए, उसने भगवान् के अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं देखा।

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः ।
नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको
नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये ॥ ४४ ॥

prāyeṇa deva munayaḥ sva-vimukti-kāmā maunaṁ caranti vijane na parārtha-niṣṭhāḥ naitān vihāya kṛpaṇān vimumukṣa eko nānyaṁ tvad asya śaraṇaṁ bhramato 'nupaśye

अर्थ: हे भगवन्, अधिकांश ऋषि, अपनी मुक्ति की कामना करते हुए, मौन एकान्त में विचरते हैं, दूसरों के हित से उदासीन। किन्तु मैं इन दीन, असहाय आत्माओं को पीछे छोड़कर अकेले मुक्त नहीं होना चाहता; क्योंकि संसार में भटकती इनके लिए मैं आपके अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं देखता। (SB 7.9.44)



प्रह्लाद की प्रार्थना करुणा में बाहर की ओर मुड़ती है: स्वयं के लिए अकेले मुक्ति चाहने को अनिच्छुक, वह समस्त भटकती, विस्मृत आत्माओं के उद्धार के लिए विनती करता है (SB 7.9.43-44)।

समस्त संसार उन्हीं का है

प्रह्लाद ने आगे भगवान् की महिमा समस्त वस्तुओं के पीछे के एकमात्र सत्य के रूप में गाई — प्रत्येक कर्म का स्रोत, कर्ता तथा लक्ष्य, ताकि जो कुछ भी कोई बनाता या करता है, किसी भी साधन से, वस्तुतः भगवान् के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। उसने माया की बात की, वह अनादि भ्रम जिसे काल गति देता है, जन्म-मृत्यु का चक्र घुमाता, जिसे भगवान् से विमुख कोई पार नहीं कर सकता। उसने प्रार्थना की कि उसे उस चक्र से ऊपर उठाया जाए और सदा भक्तों की संगति में रखा जाए, अपने प्रिय मित्र तथा प्रभु की मन-मोहक कथाओं को सदा दोहराते हुए। माता-पिता में, औषधि में, हर सांसारिक उपाय में, उसने कहा, कोई सच्ची रक्षा नहीं है; एकमात्र निश्चित आश्रय स्वयं भगवान् हैं। उसकी प्रार्थना, आदि से अन्त तक, एक ऐसी आत्मा का स्वीकार है जिसने अपनी समूची सुरक्षा भगवान् में पा ली है और उस सुरक्षा को सबके साथ बाँटना चाहती है।



बालक की प्रेमपूर्ण प्रार्थना से शान्त होकर, भगवान् नृसिंह अपने भक्त के प्रति शान्त तथा कृपालु हो जाते हैं (SB 7.9.4-5)।

सेवा के अतिरिक्त कुछ न चाहना

भगवान् में पूर्णतः स्थिर हृदय से अर्पित यह प्रार्थना सुनकर, भगवान् नृसिंह ने अपना क्रोध त्याग दिया। प्रह्लाद की ओर अत्यन्त स्नेह से मुड़ते हुए, उन्होंने उसे दीर्घायु का आशीर्वाद दिया और स्पष्ट कहा: मुझे प्रसन्न करने से ही, और किसी अन्य उपाय से नहीं, कोई भी प्राणी सच्ची तृप्ति पाता है; अतः जो भी वर तुम चाहो माँगो, क्योंकि जो मुझसे प्रेम करते हैं उनकी इच्छाएँ पूर्ण करने में मुझे आनन्द आता है।

श्रीनारद उवाच

एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः ।

एकान्तित्वाद् भगवति नैच्छत्तानसुरोत्तमः ॥ ५५ ॥

śrī-nārada uvāca evaṁ pralobhyamāno 'pi varair loka-pralobhanaiḥ ekāntitvād bhagavati naicchat tān asurottamaḥ

अर्थ: नारद मुनि ने कहा: इस प्रकार समस्त संसार को लुभाने वाले वरों से प्रलोभित होने पर भी, असुर-कुल के उस श्रेष्ठ पुरुष ने उन्हें नहीं चाहा, क्योंकि भगवान् के प्रति उसकी भक्ति अनन्य थी और उसमें किसी अन्य वस्तु का स्थान नहीं था। (SB 7.9.55)

प्रह्लाद की समस्त प्रार्थना का यही शान्त उत्तर है। समस्त संसार को खींचने वाले वे ही पुरस्कार — धन, शक्ति, पद, हर सांसारिक इच्छा की पूर्ति — दिए जाने पर भी, उसके पास उनके लिए कोई स्थान शेष नहीं है; उसकी एकमात्र आसक्ति पहले ही भगवान् को अर्पित हो चुकी है। यही वह लक्ष्य है जिसकी ओर समूची प्रार्थना बढ़ती रही है: त्याग किसी कष्ट के रूप में नहीं, अपितु प्रेम से इतना परिपूर्ण हृदय के रूप में कि छोटी वस्तुएँ उसमें स्थान ही न पा सकें।

इस अध्याय की मुख्य शिक्षाएँ

1. कृपा पहले आती है; योग्यताएँ बाद में। प्रह्लाद अपने प्रयास से नहीं अपितु भगवान् के हाथ के स्पर्श से पवित्र तथा प्रबुद्ध होता है। आध्यात्मिक जीवन अर्जित पुण्य से नहीं, प्राप्त कृपा से आरम्भ होता है (SB 7.9.5-6)।
2. पद नहीं, भक्ति भगवान् को जीतती है। धन, जन्म, विद्या तथा तप स्वयं भगवान् को प्रसन्न नहीं कर सकते; सच्चा प्रेम कर सकता है, नीचतम से भी। एक विनम्र भक्त एक अभिमानी विद्वान से श्रेष्ठ है (SB 7.9.8-10)।
3. सच्चा भय संकट नहीं, भगवान् की विस्मृति है। प्रह्लाद उग्र भगवान् से तथा संसार से भी निर्भय है; जिसके लिए वह शोक करता है वह है क्षणिक सुख के लिए भगवान् से विमुख जीवन (SB 7.9.43)।
4. सच्ची भक्ति समस्त के प्रति करुणा में उमड़ती है। प्रह्लाद स्वयं के लिए अकेले मुक्ति चाहने से मना कर देता है, इसके बजाय हर भटकती आत्मा के लिए प्रार्थना करता है। भगवान् से प्रेम तथा समस्त प्राणियों से प्रेम हृदय की एक ही गति है (SB 7.9.44)।
5. निर्हेतुक कृपा किसी पद की मोहताज नहीं। भगवान् का हाथ, जो कभी ब्रह्मा, शिव अथवा श्री पर भी नहीं रखा गया, एक असुर के पुत्र पर टिकता है; और अन्ततः जब कोई भी वर देने की पेशकश की जाती है, तो प्रह्लाद उनमें से कुछ नहीं चाहता, क्योंकि उसका हृदय पहले ही भगवान् से भर चुका है (SB 7.9.26, 55)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

प्रह्लाद जो कुछ कहता है उसमें सबसे मर्मभेदी यह है कि वह स्वयं के लिए भयभीत नहीं है। उसने अभी-अभी अपने ही पिता को गिरते देखा है; वह एक ऐसे रूप के सम्मुख खड़ा है जो इतना भयंकर है कि देवता निकट जाने का साहस नहीं करते — और फिर भी उसका हृदय शान्त है, क्योंकि वह “भगवान् की महिमा गाने के अमृत में डूबा” है। यही वह रहस्य है जो समूचा अध्याय हमें देता है: कि भगवान् में लीन मन भय की पहुँच से सर्वथा परे है। किन्तु प्रह्लाद इस शान्ति को अपने तक नहीं रखता। जिस क्षण वह सुरक्षित होता है, उसके विचार बाहर की ओर मुड़ जाते हैं, उन भ्रमित भीड़ों की ओर जो अपने सुख के लिए अब भी क्षणभंगुर छायाओं के पीछे भाग रही हैं। वह अकेले नहीं बचेगा। हमारे साधारण स्वार्थ के लिए इससे कोमल कोई भर्त्सना नहीं, और इससे स्पष्ट कोई चित्र नहीं कि भक्ति अन्ततः व्यक्ति को क्या बना देती है: वह कोई नहीं जो संसार से भाग जाए, अपितु वह जो, आश्रय पा लेने पर, दूसरों को उसके बिना नहीं देख सकता। समूचे संसार के लिए प्रार्थना करना, जैसे एक बालक ने कभी भगवान् के नरसिंह-रूप के सम्मुख प्रार्थना की, प्रेमी हृदय की सर्वोच्च ऊँचाई है।

एक दैनिक भक्ते-अभ्यास

आज अपनी प्रार्थना में स्वयं के अतिरिक्त किसी और को भी सम्मिलित करें। भगवान् के अपने स्मरण के पश्चात्, रुकें और कुछ अन्य लोगों के लिए सच्चे मन से प्रार्थना करें — एक संघर्षरत मित्र, एक अजनबी, यहाँ तक कि कोई कठिन व्यक्ति — कि वे भी भगवान् में आश्रय तथा शान्ति पाएँ। ऐसा करते हुए, भीतर दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” हृदय के इस छोटे-से विस्तार को प्रह्लाद की उस प्रार्थना में एक भाग बनने दें, जिसने मुक्ति केवल अपने लिए नहीं अपितु हर भटकती आत्मा के लिए चाही।

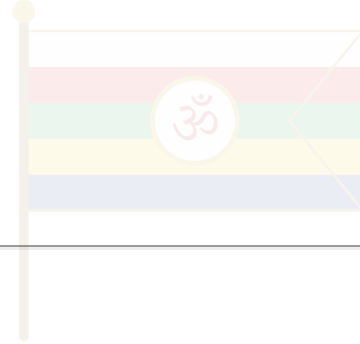
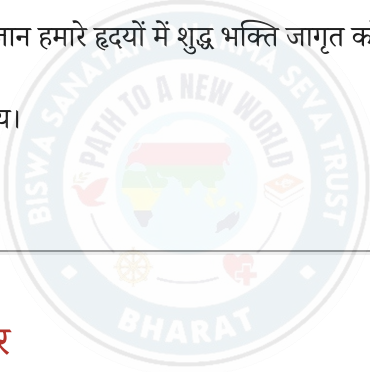
उपसंहार

सप्तम स्कन्ध का नवम अध्याय वह मधुरता दिखाता है जो भगवान् की उग्रता के उस पार स्थित है: एक बालक का प्रेम, जहाँ देवता भी जाने का साहस न कर सके, उन्हें पूर्णतः शान्त कर देता है। प्रह्लाद की प्रार्थना सिखाती है कि केवल भक्ति ही भगवान् को जीतती है, और उनकी कृपा महानों तक पहुँचने से पहले सबसे नीचे तक पहुँच सकती है। यह भी सिखाती है कि भगवान् में सचमुच सुरक्षित हृदय स्वयं के लिए कुछ नहीं डरता, और केवल उन अन्यो के लिए शोक करता है जो अब भी भटक रहे हैं। और जब अन्ततः भगवान् कोई भी वर देने की पेशकश करते हैं, प्रह्लाद उनमें से कुछ नहीं चाहता; उसका प्रेम कभी लेन-देन नहीं था। यही वह शिखर है जिस ओर यह समूचा अध्याय बढ़ता है: ऐसी परिपूर्ण भक्ति जो केवल सेवा करना चाहती है, और हर भटकती आत्मा को घर लौटते देखना चाहती है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), सप्तम स्कन्ध, नवम प्रवचन, पृष्ठ 689–697।
- श्रृंखला: Srīmad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-7-chapter-9-prahlada-prayers-to-lord-narasimha-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

